

## **“ रशीद जहाँ की कहानियां ” में धार्मिक संदर्भ**

**डॉ. पठान रहीम खान, असिस्टेंट प्रोफेसर**

### **शोध सारांश:-**

इस्वीसवीं सदी के मुस्लिम लेखक माध्यम से साहित्य के माध्यम से धर्म का सही रूप प्रतिष्ठित करना मूल लक्ष्य रहा है। आज धर्म के नाम पर कई शोषण होते आ रहे हैं। स्त्री पर धर्म के नाम पर अत्याचार किया जा रहा है। चाहे कोई भी धर्म हो, मनुष्य को सही दिशा, सही जीवन जीने का प्रेरक होता है। कोई भी धर्म, मनुष्य को आपसी शत्रुता करना नहीं सीखाता है। भारत धर्मों का गंगाघर है, जहाँ अनेक धर्म प्यार और स्नेह से आपस में मिलकर सद्भाव के साथ रहते हैं। ऐसे ही इस्लाम धर्म सब धर्मों में से एक है, जो अपने धर्म अनुयायी जीवन जीता है, परंतु इसमें बहुत सी अच्छाईयाँ आज छिप कर, बुराईयों को प्रधानता दे रही है। जिसको गलत प्रमाणित कर, मुस्लिम धर्म में छिपे सद्भाव को सामने लाना मुस्लिम साहित्यकारों का उद्देश्य रहा है। रशीद जहाँ ने भी अपनी कहानियों में धर्म के सही रूपको दर्शाने का प्रयत्न किया है।

भारत देश एक धर्मनिरपेक्ष देश है, जहाँ पर अनेक धर्मों के लोग अपने-अपने धर्म तथा कर्म के साथ जीवन जीते हैं। कोई भी धर्म मनुष्य को आपस में सद्भाव सहित जीवन जीना सीखाता है, न कि बैर करना। इसी धार्मिक सद्भाव को हिंदी साहित्य में साहित्यकारों ने चित्रित करने की कोशिश की है। हिंदी साहित्य में साहित्यकारों ने मनुष्य के मनुष्यता धर्म को सर्वश्रेष्ठ प्रतिपादित करना दर्शाया है, क्योंकि कोई भी धर्म मनुष्यता धर्म को ही सर्वोपरि स्वीकार करता है।

मुस्लिम कथाकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से मुस्लिम समाज में धार्मिक चेतना जगाने का प्रयास किया है। रशीद जहाँ की 'इफ्तारी' कहानी में मुस्लिम समाज के धर्म गुरुओं की दोहरी मानसिकता को रेखांकित किया है। इस कहानी में कथाकार का कथन है कि- "उस मोहल्ले में ज्यादातर मुसलमान आबाद थे। इलावा घरों के यहाँ तीन मस्जिदें थीं। उन मस्जिदों के मुल्लाओं में एक किस्म

की होड़ लगी रहती थी, कौन इन जाहिल गरीबों को ज्यादा उल्लू बनाए और इनकी गाड़ी कमाई में से ज्यादा हजम करे। ये मुल्ला बच्चों को कुरआन पढ़ाने से लेकर झाड़ फूंक, ताबीज-गंडा यानी हर उन तरीकों के उस्ताद थे, जिससे वे इन जुलाहों और लोहारों को बेवकूफ बना सकें। ये तीन बेकार और फिजूल खानदान इन मेहनत करनेवाले इंसानों के बीच में इस तरह रहते थे कि- जिस तरह घने जंगलों में दीमक रहती है और आहिस्ता-आहिस्ता दरख्तों को चाटती रहती है। ये मुल्ला सफेदपोश थे और इनके पेट पालने वाले मैले और गंदे थे। ये मुल्ला साहेबान सैयद और शरिफजादे थे और ये मेहनतकश रजील और कमीनों में गिने जाते थे।<sup>1</sup> इस प्रकार कथाकार ने इसमें धर्म गुरुओं की स्वार्थी मानसिकता को चित्रित किया है। सामान्य गरीब लोगों की आस्था का फायदा उठाकर अपनी रोटी सेंकते हैं, उक्त कथन से स्पष्ट हो जाता है।

मुस्लिम समाज के लिए रमजान का महीना बहुत ही मुबारक समझा जाता है। इसलिए हर मुसलमान पाबन्दी के साथ रमजान के महीने में रोजे रखता है। जैसे 'इफ्तारी' कहानी में रशीद जहाँ का कहना है कि- नसीबन दुपट्टा सँभालती हुई अन्दर चली गई। बरामदे में तख्त पर बेगम साहिबा बैठी थी। दस्तरख्वान सामने बिछा था, जिस पर चंद इफ्तारी की चीजें चुनी हुई थी और कुछ अभी तली जा रही थी।<sup>2</sup> इस प्रकार रमाजन का रोजा रखना हर मुसलमान पर फर्ज है। सुबह सहेर तो शाम को इफ्तारी की तैयारी की जाती है। यह त्यौहार केवल त्यौहार नहीं, बल्कि हर मनुष्य के साथ खुशियाँ बाँटने का जरिया है।

इस्लाम में सूदखोरी या ब्याज को वर्जित बताया गया है। लेकिन वर्तमान समय में देखा जाए तो, कई पूंजीपति लोग ब्याज को अपना धंधा बना लिए हैं। सामान्य लोगों की सूद के जरिए चुसाई कर रहे हैं। जैसे रशीद जहाँ की 'इफ्तारी' कहानी में कथन है कि- "ये खान सरहद के रहने वाले थे और सब सूद पर रूपए चलाते थे।"<sup>3</sup> इस प्रकार आज के समय में पूंजीपति लोग या जिनके पास अधिक पैसे हैं, वे लोग ब्याज के जरिए और अधिक धनी हो रहे हैं। ब्याज के नाम पर अधिक पैसा वसूलकरते हैं। लेकिन इस्लाम की दृष्टि से देखा जाए तो, इस्लाम में ब्याज और सूद को कोई स्थान नहीं है। लेकिन वर्तमान समय में लोग अधिक पैसों

की लालच में इस्लाम की मान्यताओं पर भी कोई ध्यान नहीं दे रहा है। वह दानवीर बनाकर ब्याज के पैसों को ही धार्मिक कार्य में लगा रहा है।

रशीद जहाँ की 'इफ्तारी' कहानी में कथन है कि- "नमाज रोजे का एक सूद खानेवाला खान बड़ा पाबन्द होता है और अपने को सच्चा मुसलमान समझता है। हालाँकि उसके मजहब ने सूद लेने को बिल्कुल मना किया है। लेकिन वह सूद को नफा कहकर हजम कर जाता है और अपने खुदा के हुजुर में अपनी इबादत एक रिश्तत की शकल में पेश करता रहता है।"<sup>4</sup> इस प्रकार इस्लाम में सूदखोरी की इजाजद नहीं है, लेकिन लोग वर्तमान में अधिक पैसों की हवस के वजह से सूद की रकम बढ़ाकर ले रहे हैं और अल्लाह को खुश करने के लिए उस पैसों को रिश्तत तरह इस्तेमाल कर रहे हैं। यही वर्तमान समय का कड़वा सत्य है।

भारतीय समाज में साम्प्रदायिकता के साथ-साथ सांप्रदायिक सद्भावना भी दिखाई देती है। रशीद जहाँ की 'मेरा एक सफ़र' कहानी में लेखिका ने धार्मिक चेतना और सद्भावना का सन्देश दिया है। इस कहानी में रेल में चल रही हिन्दू-मुस्लिम महिलाओं के बीच की लड़ाई को शांत करने की कोशिश कहानी की नायिका जुबैदा करती है। जैसे इस कहानी में कहानी की नायिका जुबैदा लड़ाई करती हुई औरतों से कहती है कि- "आप लोग लड़ना बंद करोगी या नहीं ? या मैं जंजीर खींचकर पुलिस को बुलाऊँ।"

लड़ने वालियां रुकी, मेरी तरफ देखा और जंजीर पर मेरा हाथ देखकर कुछ होश में आई। उनके हाथ थोड़े ढीले पड़े। मैं मौके की गनीमत समझकर, फिर उसी आवाज में गरजी, जरा अपनी हालत तो देखों। कोई नंगी पड़ी है। फ़ौरन उस औरत ने अपनी धोती घसीटी। उसको पहली दफा अपनी उरयानी (नंगेपन) का अहसास हुआ था। किसी का कान खिंचा हुआ है।... बहुत से हाथ अपने कानों की तरफ उठे। किसी का कुर्ता फट-फटाकर धज्जी हो गया है। आखिर बताओं कि- तुम औरते हो कि जानवर ?"<sup>5</sup> इस प्रकार आपस में लड़ रही महिलाओं की स्थिति को देखकर नायिका उनमें समझौता करने में लग जाती है। जैसे नायिका कहती है कि- "कमबक्त भहरी भेड़, तुझे इस बुढ़ापे में जेहाद की क्या सूझ रही है।"...

तुम को क्या जरूरत थी कि- चलती औरत का दुपट्टा खींच लिया। छू गया था ? तुम कहाँ की ऐसी अछूत हो ? खदर की धोती पहनकर गाँधी की चेली बनी हैं।”<sup>6</sup> इस प्रकार लड़ती हुई महिलाओं के बीच उंची आवाज में बरसती हुई नायिका को देख महिलाएं खामोश सुन रही थी। जब नायिका पुलिस में रिपोर्ट कराने की धमकी देती है, तब नायिका से एक मुसलमान महिला कहती है कि- “मिस साहब - बहु-बेटियों की इज्जत तुम्हारे हाथ में है। अब गलती हो गई, उसको जाने दो।”

“क्यों जाने दूँ ? यह सब किया-धरा तुम्हारा है। तुम इतनी देर से अपनी लड़कियों को उकसा रही थी। जो तुम डाट देती तोयह नौबत ही क्यों आती। बेढंगी, बददिमाग, लड़का। तुमने मेरे बाल नोचे। मैं इतने आसानी से नहीं छोड़ूंगी।”

श्रीमती यह सुनकर जोर से हंसी और झुककर एक हिन्दू से कुछ कहना चाहती थी कि- मैं बीच में बोल पड़ी, “आप कौन सी अच्छी है। अपने मुझे लड़ाई में शरीक होने के लिए उभारा। जो मैं नहीं उठी, तो जानकर मेरे ऊपर गिरी जिससे मैं जरूर शरीक होऊँ। आप भी इतनी देर से हिन्दुओं को उकसा रही थी। लीडर का शौक है, तो बाजार में जाकर कीजिए। यह आपके तेज में लिखा है कि- जहाँ मुसलमान देखो गूँथ जाओ। आप स्टेशन मास्टर की बीवी हो या कोई और, मैं आपका नाम भी जरूर लिखवाऊँगी।”<sup>7</sup> इस प्रकार नायिका ने हिम्मत और सहस के बल पर साम्प्रदायिक द्वेष को सामाजिक सद्भावना में बदल देती हैं। इसका परिणाम अभीतक धर्म के नाम पर लड़ रही महिलाएं और लड़कियां आपस में लड़ने वाली एक दूसरे से माफ़ी मांग रही थी। जैसे कि- “बहन जी, दो मिनट का सफ़र है। लड़ाई-दंगे से क्या फायदा। मेरे दुपट्टे से जब इतना छूत है, तो मेरे हाथ को तुम कब छुओंगी। खैर, मुझे माफ़ कर दो। मेरी ही गलती थी।” एक ऐसी बात हुई, जिसकी मुझे बिलकुल उम्मीद न थी। वह हिन्दू औरत जो गाढ़े की साड़ी में थी, उससे लिपट गई और रोने लगी। इस प्रकार सांप्रदायिक सद्भावना एवं धार्मिक चेतना चित्रण किया गया है, जो भारतीय समाज की एकता की मिसाल है।

वर्तमान समय में भी मुस्लिम समाज में धार्मिक शिक्षा को महत्त्व दिया जाता है। सरकारी शिक्षा का अभाव और दिनी शिक्षा को अहम समझा जाता है। इसलिए मुस्लिम समाज के लड़के-लड़कियां दिनी शिक्षा बचपन से ही ग्रहण करते हैं। रशीद जहाँ की 'बेजवान' कहानी में इस वास्तविकता को रेखांकित किया गया है। जैसे कि- "स्कूल की तालीम तो खैर, हामिद हसन के यहाँ कहाँ होती। उनके यहाँ तो लड़के तक ने खुदा के फजल से सिर्फ इल्मे-दिन ही की तालीम हासिल की थी। पहले हामिद हसन ने उसको कुरान हिफज (याद) करवाया, फिर फारसी पढ़वाई और फिर जब यह बड़ा हो गया, तो देवबंद भेजकर आलिम बनवाया।...

लड़कियों की तालीम के हामिद हसन बहुत खिलाफ थे। कुरान शरीफ दो एक दीनियात (धार्मिक) की किताबें सिद्दीका बेगम पढ़ा दी गई थी।"<sup>8</sup> इस प्रकार धार्मिक शिक्षा को महत्त्व दिया जाता है। लेकिन वर्तमान समाज को देखकर यह लगता है कि- समाज का उद्धार धार्मिक शिक्षा से नहीं, बल्कि वर्तमान समय की आधुनिक शिक्षा एवं अंग्रेजी के साथ सरकारी शिक्षा से हो सकता है।

मुस्लिम समाज में यह भी देखा जा सकता है कि- आज भी कई ऐसे परिवार हैं, जो पढ़ी-लिखी लड़की को अपने यहाँ की बहु बनाना नहीं चाहते हैं। जैसे रशीद जहाँ की 'बेजवान' कहानी में लेखिका का कहना है कि- "भाई से इस बात पर लड़ाई हो गई थी कि- लड़कियों को घर पर भी तालीम न दो। एक भतीजी से अपने लड़के की मंगनी की थी। मगर इस बात पर कि- लड़कियों को अंग्रेजी मत पढ़वाओं मंगनी तोड़ दी और कहा, मैं घर में बहू लाना चाहती हूँ, मेम साहब नहीं।"<sup>9</sup> इस प्रकार की मानसिकता से ही पढ़ी-लिखी लड़कियां अक्सर अधिक समय तक घर में कुँवारी रह जाती हैं। इसी वजह से अधिकांश लड़कियों को सिर्फ धार्मिक शिक्षा ही दी जाती है।

धार्मिक शिक्षा मात्र दिनी मालूमात के लिए ठीक है, परन्तु समाज में प्रतिष्ठा और अच्छी नौकरी के लिए मुस्लिम समाज को शिक्षा का रुख बदलना ही होगा। रशीद जहाँ की 'सलमा' कहानी में कथन है कि- "जमीला तुम्हें अंग्रेजी सीखनी चाहिए, तुम्हारी फारसी और अरबी अब खिलाफे फैशन हो चुकी है।"<sup>10</sup> इस प्रकार इस कहानी में शिक्षा के महत्त्व को रेखांकित किया गया है। अच्छे भविष्य के लिए

लड़की हो या लड़का सभी को वर्तमान समय की शिक्षा को अहम् मानकर ही शिक्षा हासिल करनी चाहिए। धार्मिक शिक्षा सिर्फ दिनी मालूमात के लिए लाभदायक है, परन्तु दिनी शिक्षा के साथ-साथ अंग्रेजी शिक्षा हासिल करना वर्तमान समय की जरूरत है।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि- मुस्लिम समुदाय में धर्म एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण पक्ष है। यह समुदाय अपने धर्म के अनुरूप अपना जीवन जीता है। परन्तु साथ ही धार्मिक सद्भाव के प्रति भी पूरा ध्यान रखता है। अपने धर्म के अलावा किसी भी धर्म के लोगों के प्रति भी सद्भावपूर्ण दृष्टि से व्यवहार करता है। किसी भी धर्म में स्त्री को धर्म के साथ जोड़कर ज्यादातर देखा जाता है। स्त्री चाहे किसी भी वर्ग, धर्म ही क्यों न हो, उसे धार्मिक दृष्टि से निम्न स्तर पर रखा जाता है। स्त्री को धर्म के नाम पर हमेशा ऐसे कार्य करने पर मजबूर किया जाता है, जो कि धर्म के नाम पर अधार्मिक कार्य को बढ़ावा देता है। इस ओर अनेक साहित्यकारों ने अपनी दृष्टि डाली है, जिसको साहित्य में उजागर कर, मानवता को प्रतिष्ठा करना मुख्य उद्देश्य रहा है।

**संदर्भ सूची :-**

1. रशीद जहाँ की कहानियाँ – सं. शकील सिद्दीकी, पृ. सं. 22
2. रशीद जहाँ की कहानियाँ – सं. शकील सिद्दीकी, पृ. सं. 21
3. रशीद जहाँ की कहानियाँ – सं. शकील सिद्दीकी, पृ. सं. 23
4. रशीद जहाँ की कहानियाँ – सं. शकील सिद्दीकी, पृ. सं. 23
5. रशीद जहाँ की कहानियाँ – सं. शकील सिद्दीकी, पृ. सं. 53
6. रशीद जहाँ की कहानियाँ – सं. शकील सिद्दीकी, पृ. सं. 54
7. रशीद जहाँ की कहानियाँ – सं. शकील सिद्दीकी, पृ. सं. 54-55
8. रशीद जहाँ की कहानियाँ – सं. शकील सिद्दीकी, पृ. सं. 58
9. रशीद जहाँ की कहानियाँ – सं. शकील सिद्दीकी, पृ. सं. 58
10. रशीद जहाँ की कहानियाँ – सं. शकील सिद्दीकी, पृ. सं. 103

**डॉ. पठान रहीम खान, डी. लिट्.,**  
असिस्टेंट प्रोफेसर,  
हिंदी विभाग,  
मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू युनिवर्सिटी,  
गौच्चीबौली, हैदराबाद – 500032